आकाश से प्रार्थना

श्रीगुरुमाई के साथ सिद्धयोग सत्संग

शुक्रवार, ३ जनवरी, २०२०

शुक्रवार, ३ जनवरी, २०२० को श्री मुक्तानन्द आश्रम में श्रीगुरुमाई के साथ एक सिद्धयोग सत्संग का आयोजन हुआ। यह सत्संग, ईस्टर्न स्टैण्डर्ड समय [यू.एस.ए.] के अनुसार सुबह ११:३० बजे से लेकर दोपहर १:०० बजे तक हुआ, और इसका एकमात्र उद्देश्य था ऑस्ट्रेलिया के लिए वर्षारूपी आशीर्वादों का आवाहन करना।

पिछले कई महीनों से ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी जो आग छुट-पुट रूप से लगी हुई प्रतीत हो रही थी, वह एक विशालकाय दावाग्नि बन गई है जिसने इलाक़े के निवासियों, पेड़-पौधों और वन्य-जीवन को संकट में डाल दिया है। लम्बे समय से सूखा पड़ने के कारण जंगल की यह आग बहुत बढ़ गई है।

जब ऐसी किसी आपदा से सामना होता है, ख़ासकर ऐसी आपदा जो इतने बड़े पैमाने पर हो तो लोगों का यह सोचना स्वाभाविक है कि वे क्या कर सकते हैं; वे किस प्रकार मदद कर सकते हैं; इस स्थिति में सुधार लाने के लिए उनकी क्षमता क्या है। सिद्धयोग पथ पर गुरुमाई जी यह सिखाती हैं कि एक चीज़ जो हम सब कर सकते हैं, वह है प्रार्थना — भले ही हम इस विश्व में कहीं भी हों या हमारे पास कोई संसाधन हों या न हों। हम प्रार्थना कर सकते हैं और हम अपने आशीर्वाद भेज सकते हैं। सत्संग में और इस संसार व इसके निवासियों के हित के लिए सिद्धयोग अभ्यास करने में अपार शक्ति है। अनेक लोग व्यक्तिगत तौर पर अपनी प्रार्थनाएँ व आशीर्वाद भेजते रहे हैं; फिर भी संयुक्त-संकल्प की शक्ति से बढ़कर कुछ है ही नहीं। इसीलिए गुरुमाई जी ने कहा है कि हम सब एकजुट होकर ऐसा करें।

श्रीगुरुमाई के कहने पर, ३ जनवरी का सत्संग मेघ मल्हार राग की धुन में स्वरबद्ध किए गए संगीत से गूँज उठा। इस राग से मेघ स्वाभाविक रूप से अपने आप एकत्र हो जाते हैं और नीचे धरा पर शुद्ध, पवित्र जल की वर्षा करते हैं।

गुरुमाई जी ने 'झरि लागै महलिया गगन घहराए' भजन गाया, और जब वे गा रही थीं तो प्रतिभागियों ने उन्हें ध्यान से सुना और वे भी गुरुमाई जी के साथ गाने लगे। सन्त-कवि धर्मदास जी द्वारा लिखित इस भजन में यह छवि चित्रित की गई है कि वर्षा से भरे हुए मेघ अन्तराकाश में अमृत-वर्षा कर रहे हैं।

ऑस्ट्रेलिया की अपनी टीचिंग्स् विज़िट के दौरान, सन् १९९७ में सिडनी शहर में, श्रीगुरुमाई ने इस भजन की संगीत-रचना की थी। उन्होंने यह संगीत-रचना मेघ मल्हार राग में की।

भजन के बाद, गुरुमाई जी ने सबको निर्देशित किया कि सभी प्रतिभागी यह कल्पना करें कि सौम्यता से बरसती हुई वर्षा चमचमा रही है; सभी यह कल्पना करें कि वर्षा तपती हुई धरती को ठण्डक दे रही है; यह कल्पना करें कि हर चिंगारी पानी में बदल रही है और नमी से दमक रही है। फिर गुरुमाई जी ने सभी को 'ॐ' का गान करने में निर्देशित किया और जब आदिनाद चारों ओर स्पन्दित होने लगा तब प्रतिभागी वर्षा का आवाहन करने वाले वाद्ययन्त्रों को बजाते हुए सत्संग-हॉल में घूमने लगे।

उस क्षण में बहुत स्पष्ट था कि स्वयं ब्रह्माण्ड से उत्पन्न होते 'ॐ' के नाद की शक्ति के साथ जुड़कर, लोगों के संकल्प व मानसचित्रण, वास्तव में ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैन्ड की ओर संचरित हो रहे हैं। यह अनुभव इतना सुन्दर था कि इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। ऐसा लग रहा था मानो सत्संग के प्रतिभागी विश्व के उन सभी लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जो दिल से चाहते हैं कि ऑस्ट्रेलिया अपने कष्ट से उबर जाए।

स्वामी अखण्डानन्द इस धारणा के साथ सबको ध्यान में ले गए कि ऑस्ट्रेलिया की भूमि पर प्रचुरता से वर्षा हो रही है। यह धारणा मेघ मल्हार राग के स्वरों से प्रेरित थी और इस धारणा में इस राग के स्वर भी शामिल थे।

फिर 'ॐ नमः शिवाय' की मन्त्र-धुन हुई; मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' सिद्धयोग परम्परा का मन्त्र है, संरक्षण का मन्त्र है, यह वह मन्त्र है जिसे सिद्धयोगी प्रार्थना करने व आशीर्वाद भेजने के लिए गाते हैं। राग वही था : मेघ मल्हार। मन्त्र के हर आवर्तन के साथ इस राग के रसों का यानी शक्ति और गहन सुख के इसके गुणों का, वर्षा के लिए इसके आवाहन का अनुभव और भी अधिक होने लगा। संगीत का उतार-चढ़ाव सबके स्वरों में बहने लगा; प्रतिभागियों ने इस छवि को अपने बोध में बनाए रखा कि अकालग्रस्त स्थान पर वर्षा हो रही है; नामसंकीर्तन और यह सम्पूर्ण सत्संग, संयुक्त-संकल्प की शक्ति के अद्वितीय उदाहरण बन गए।

और अब इस सत्संग के कुछ अंश सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं ताकि सार्वभौमिक संघम् में सभी लोग ऑस्ट्रेलिया को अपनी प्रार्थनाएँ व आशीर्वाद भेजने हेतु एक-साथ जुड़ते जाएँ।

स्मरण रखें : हम एक मानवजाति हैं। हम परस्पर जुड़े हुए हैं। सौहार्द के समय में और आपदा के समय में भी, हमें एकजुट होना चाहिए। हमें एकता के अपने बोध में नई ऊर्जा का संचार करना चाहिए।

स्मरण रखें : हम एक धरती के हैं। यदि इस धरती के किसी एक भाग को कष्ट हो रहा हो तो इसे महत्त्व देना चाहिए। हम सबको इसे महसूस करना चाहिए। हम सबको अपने हृदय की अच्छाई को फैलाने के तरीक़े खोजने चाहिए।

© २०२० एस. वाय.डी. ए.फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।